ऐसा आवत दिल हुकमें

ऐसा आवत दिल हुकमें, यों इस्कें आतम खड़ी होए।

जब हक सूरत दिल में चुभे, तब रुह जागी देखो सोए।।

नींद उड़े रहे न सुपना, और सुपने में देखना हक।

मेहर इलम जोस हुकमें, हक देखिए बेसक।।

रुह तेती जागी जानियो, जेता दिलमें चुभे हक अंग।

जो अंग हिरदे न आइया, रुह के तेती फरामोसी संग।।

मोहे दिलमें हुकमें यो कह्या, जो दिलमें आवे हक मुख।

तो खड़ा होए मुख रुह का, हकसों होए सनमुख।।

महामत हुकमें केहेत हैं, जो होवे अर्स अरवाए।

रुह जागे का एह उद्दम, तो ले हुकम सिर चढ़ाए।।